आप की अमानत

आप की सेवा में



प्रस्तुति

मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीकी

प्रकाशन

सनाबिल बुक डिपो

नियर फायर स्टेशन, मुग़लपुरा, हैदराबाद

आपकी अमानत

(आपकी सेवा में)

प्रस्तुति

मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीक़ी

अरमुग़ान पब्लिकेशन
फुलत, मुज़फ़्फ़र नगर (यू०पी०)

२००६ संस्करण

नाम किताबः : आपकी अमानत

प्रस्तुति

मुहम्मद कलीम सिद्दीक़ी

☆

प्रकाशक

अरमुग़ान पब्लिकेशन

फुलत, मुज़फ़्फ़र नगर (यू०पी०)

☆

Composed & Designed By :
Sayyid Muhammad Akram Kazmi,
Deobnad Saharanpur (223814)
Email: akramkazmidbd@yahoo.com

दो शब्द

यदि आग की एक छोटी सी चिंगारी आपके सामने पडी हो और एक अबोध बच्चा सामने से नंगे पांव आ रहा हो और उसका नन्हा सा पांव सीधे आग पर पड़ने जा रहा हो तो आप क्या करेंगे?

आप तुरन्त उस बच्चे को गोद में उठा लेंगे और आग से दूर खड़ा करके अपार प्रसन्नता का अनुभव करेंगें।

इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य आग में झुलस जाये या जल जाये तो आप तड़प जाते हैं और उसके प्रति आपके दिल में सहानुभूति पैदा हो जाती है।

क्या आपने कभी सोचा अख़िर ऐसा क्यों है? इसलिए कि समस्त मानव समाज केवल एक मातृ-पिता की संतान है और हर एक के सीने में एक धड़कता हुआ दिल है, जिसमें प्रेम है, हमदर्दी है और सहानुभूति है वह एक दूसरे के दुःख सुख में तड़पता है और एक दूसरे की मदद करके प्रसन्न होता है। इसलिए सच्चा इन्सान और मानव वही है जिसके सीने में पूरी मानवता के लिए प्रेम उबलता हो, जिसका हर कार्य मानवता की सेवा के लिए हो और जो हर एक को दुःख दर्द में देखकर तड़प जाए और उसकी मदद उसके जीवन का अटूट अंग बन जाए।

इस संसार में मनुष्य का यह जीवन अस्थाई है, और

मरने के बाद उसे एक और जीवन मिलेगा जो स्थाई होगा। अपने सच्चे मालिक की उपासना, और केवल उसी की माने बिना मरने के बाद के जीवन में स्वर्ग प्राप्त नही हो सकता और उसे सदा के लिए नर्क का ईधन बनना पड़ेगा।

आज लाखों करोड़ों आदमी नर्क का ईंधन बनने की होड़ में लगे हुए हैं और ऐसे मार्ग पर चल रहे हैं जो सीधे नर्क की ओर जाता है। इस वातावरण में उन तमाम लोगों का दायित्व है जो मानव समूह से प्रेम करते हैं और मानवता में आस्था रखते हैं कि वे आगे आयें और नर्क में गिर रहे इंसानों को बचाने का अपना कर्तव्य पूरा करें।

हमें खुशी है कि मानव जाति से सच्ची सहानुभूति रखने वाले और उनको नर्क की आग से बचा लेने के दुख में घुलने वाले मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीकी ने प्रेम और स्नेह के कुछ फूल प्रस्तुत किये हैं। जिसमें मानवता के प्रति उनका प्रेम साफ झलकता है और इसके माध्यम से उन्होंने वह कर्तव्य पूरा किया है जो एक सच्चे मुसलमान होने के नाते हम सब पर है।

इन शब्दों के साथ दिल के ये टुकड़े और "आप की अमानत" आप के समक्ष प्रस्तुत है।

वसी सुलेमान नदवी
सम्पादक उर्दू मासिक अरमुग़ान
फुलत, मुज़फ़्फ़र नगर (यू०पी०)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त करूणामय और दयावान है

मुझे क्षमा करना

मेरे प्रिय पाठक! मुझे क्षमा करना, मैं अपनी और अपनी तमाम मुस्लिम बिरादरी की ओर से आप से क्षमा और माफी मांगता हूँ जिसने मानव जगत के सब से बड़े दुश्मन शैतान (राक्षस) के बहकावे में आकर आपकी सबसे बड़ी दौलत आप तक नहीं पहुचाई, उस शैतान ने पाप की जगह पापी की घृणा दिल में बैठाकर इस पूरे संसार को युद्ध का मैदान बना दिया। इस ग़लती का विचार करके ही मैंने आज कलम उठाया है कि आप का अधिकार (हक़) आप तक पहुंचाऊँ और निःस्वार्थ होकर प्रेम और मानवता की बातें आप से कहूं।

वह सच्चा मालिक जो दिलों के भेद जानता है, गवाह है कि इन पृष्ठों को आप तक पहुंचाने में मैं निःस्वार्थ हूं और सच्ची हमदर्दी का हक अदा करना चाहता हूँ। इन बातों को आप तक न पहुंचा पाने के गम में कितनी रातों की मेरी नींद उड़ी है। आप के पास एक दिल है उस से पूछ लीजिये, वह बिल्कुल सच्चा होता है।

एक प्रेमवाणी

यह बात कहने की नही मगर मेरी इच्छा है कि मेरी इन बातों को जो प्रेमवाणी है, आप प्रेम की आंखों से देखें और पढ़ें। उस मालिक के लिए जो सारे संसार को चलाने और बनाने वाला है ग़ौर करें ताकि मेरे दिल और आत्मा को शांति प्राप्त हो कि मैंने अपने भाई या

बहिन की धरोहर उस तक पहुंचाई, और अपने इंसान होने का कर्तव्य पूरा कर दिया।

इस संसार में आने के बाद एक मनुष्य के लिए जिस सत्य को जानना और मानना आवश्यक है और जो उसका सबसे बड़ा उत्तरदायित्व और कर्तव्य है वह प्रेमवाणी मैं आपको सुनाना चाहता हूँ।

प्रकृति का सबसे बड़ा सत्य

इस संसार बल्कि प्रकृति की सब से बड़ी सच्चाई यह है कि इस संसार, सृष्टि और कायनात का बनाने वाला, पैदा करने वाला और उसका प्रबन्ध चलाने वाला सिर्फ और सिर्फ अकेला मालिक है। वह अपने अस्तित्व (ज़ात) और गुणों में अकेला है। संसार को बनाने, चलाने, मारने, जिलाने में उसका कोई साझी नहीं। वह एक ऐसी शक्ति है जो हर जगह मौजूद है, हर एक की सुनता है और हर एक को देखता है। समस्त संसार में एक पत्ता भी उसकी आज्ञा के बिना नहीं हिल सकता। हर मनुष्य की आत्मा इसकी गवाही देती है चाहे वह किसी भी धर्म का मानने वाला हो और चाहे मूर्ति पूजा करता हो मगर अन्दर से वह यह विश्वास रखता है कि पालनहार रब और असली मालिक केवल वही एक है।

मनुष्य की बुद्धि में भी इसके अतिरिक्त कोई बात नहीं आती कि सारी सृष्टि का मालिक अकेला है। यदि किसी स्कूल के दो प्रिंसिपल हों तो स्कूल नहीं चल सकता एक गाँव के दो प्रधान हों तो गाँव का प्रबन्ध नष्ट हो जाता है किसी एक देश के दो बादशाह नहीं हो सकते तो इतनी बड़ी सृष्टि (संसार) का प्रबन्ध एक से ज्यादा खुदा या मालिकों द्वारा कैसे चल सकता है? और संसार के प्रबन्धक कई लोग किस प्रकार हो सकते हैं?

एक दलील

कुरआन जो ईश्वर वाणी है उसने संसार को अपने सत्य ईश्वर वाणी होने के लिए यह चुनौती दी कि :

"अगर तुमको संदेह है कि कुरआन उस मालिक का सच्चा कलाम नहीं है तो इस जैसी एक सूरह (छोटा अध्याय) ही बनाकर दिखाओ और इस कार्य के लिए ईश्वर के सिवा समस्त संसार को अपनी मदद के लिए बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।" (सूरह-अल बक़रा : २३)

चौदह सौ (१४००) साल से आज तक इस संसार के बसने वाले, और साइंस, कम्प्यूटर तक शोध करके थक चुके और अपना सिर झुका चुके हैं, किसी में भी यह कहने की हिम्मत नहीं हुई कि यह अल्लाह की किताब नहीं है।

इस पवित्र किताब में मालिक ने हमारी बुद्धि को समझाने के लिए अनेक दलीलें दी हैं। एक उदाहरण यह है : "अगर धरती और आकाश में अनेक माबूद (मालिक) होते तो ख़राबी और फ़साद मच जाता।" बात साफ है, अगर एक के अलावा कई मालिक होते तो झगड़ा होता। एक कहता अब रात होगी, दूसरा कहता दिन होगा। एक कहता कि छः महीने का दिन होगा, दूसरा कहता तीन महीने का होगा। एक कहता सूरज आज पश्चिम से निकलेगा, दूसरा कहता नहीं पूरब से निकलेगा। अगर देवी, देवताओं का यह अधिकार सच होता और वह अल्लाह के कार्यों में शरीक होते तो कभी-कभी ऐसा होता कि एक दास ने पूजा अर्चना करके वर्षा के देवता से अपनी बात स्वीकार करा ली, तभी बड़े मालिक की ओर से ऑर्डर आता है कि अभी वर्षा नही होगी, फिर नीचे वाले हड़ताल कर देते। अब लोग बैठे हैं कि दिन नहीं निकला, मालूम हुआ कि सूर्य देवता ने हड़ताल कर रखी है।

सच्ची गवाही

सच यह है संसार की हर चीज़ गवाही दे रही है यह भली भांति चलता हुआ सृष्टि का निज़ाम (व्यवस्था) गवाही दे रहा है कि संसार का मालिक अकेला और केवल अकेला है। वह जब चाहे और जो चाहे कर सकता है। उसको कल्पना और ख़्यालों में नहीं लाया जा सकता उसकी मूर्ति नहीं बनाई जा सकती। उस मालिक ने सारे संसार को मनुष्य की सेवा के लिए पैदा किया। सूरज इंसान का सेवक, हवा इंसान की सेवक, यह धरती भी मनुष्य की सेवक है, आग पानी जीव जन्तु संसार की हर वस्तु मनुष्य की सेवा के लिए बनाई गयी है। इंसान को इन सब चीजों का सरदार (बादशाह) बनाया गया है, तथा सिर्फ अपना दास और अपनी पूजा और आज्ञा पालन के लिए पैदा किया है।

न्यायोचित और इंसाफ की बात यह है कि जब पैदा करने वाला, जीवन देने वाला, मारने वाला, खाना पानी देने वाला और जीवन की हर एक आवश्यक वस्तु देने वाला वह है, तो एक सच्चे इंसान को अपना जीवन और जीवन से सम्बन्धित तमाम वस्तुऐं अपने मालिक की मर्ज़ी से और उसका आज्ञाकारी होकर प्रयोग करनी चाहियें। अगर एक मनुष्य अपना जीवन उस अकेले मालिक की आज्ञा पालन में नहीं गुज़ार रहा है तो वह इंसान नहीं।

एक बड़ी सच्चाई

उस सच्चे मालिक ने अपने सच्चे ग्रन्थ कुरआन में एक सच्चाई हम को बताई है :

अनुवाद : हर एक जीव को मौत का मज़ा चखना है। फिर तुम्हें हमारी ओर पलट कर आना होगा।

(सूरहः अनकबूत : ५८)

इस आयत के दो भाग हैं। पहला यह है कि हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है। यह ऐसी बात है कि हर धर्म, हर समाज, और हर जगह का आदमी इस बात पर यक़ीन रखता है, बल्कि जो धर्म को मानता भी नहीं वह भी इस सच्चाई के आगे सिर झुकाता है और जानवर तक मौत की सच्चाई को समझते हैं। चूहा बिल्ली को देखकर भागता है और कुत्ता भी सड़क पर आती हुई किसी गाड़ी को देखकर भाग उठता है। इसलिए कि इन को मौत का यक़ीन (विश्वास) है।

मौत के बाद

इस आयत के दूसरे भाग में कुरआन मजीद एक बड़ी सच्चाई की तरफ हमें आकर्षित करता है यदि वह इंसान की समझ में आ जाये तो सारे संसार का वातावरण बदल जाये। वह सच्चाई यह है कि तुम मरने के बाद मेरी तरफ़ लौट जाओगे और इस संसार में जैसे भी कार्य करोगे वैसा बदला पाओगे।

मरने के बाद तुम गल सड़ जाओगे और दोबारा पैदा नहीं किये जाओगे ऐसा नहीं है। न ही यह सत्य है कि मरने के बाद तुम्हारी आत्मा किसी योनि में प्रवेश कर जायेगी। यह दृष्टिकोण किसी मानवीय बुद्धि की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

पहली बात यह है कि आवागमन का यह दृष्टिकोण वेदों में उपलब्ध नहीं है। बाद के पुराणों में इसका उल्लेख है, उस से ज्ञात होता है कि इंसान के शुक्राणुओं पर लिखे, सन्तानों के गुण, पिता से पुत्र और पुत्र से उसके पुत्र में जाते हैं। इस धारणा का आरम्भ इस तरह हुआ कि शैतान (राक्षस) ने धर्म के नाम पर लोगों को ऊँच नीच में बांध दिया। धर्म के नाम पर शुद्रों से सेवा लेने और उनको नीच समझने वाले धर्म के ठेकेदारों से समाज के दबे कुचले लोगों ने जब यह सवाल किया कि जब हमारा पैदा करने वाला ईश्वर है उसने सब इंसानों को आँख, कान, नाक हर चीज़ में बराबर बनाया है तो

आप लोगों ने अपने आप को बड़ा और हमें नीचा क्यों बनाया? इसके लिए उन्होंने आवागमन का सहारा लेकर यह कह दिया कि तुम्हारे पिछले जन्म के कर्मों ने तुम्हें नीच बनाया है।

इस धारणा के अन्तर्गत सारी आत्मायें दोबारा पैदा होती हैं। और अपने कर्मों के हिसाब से योनि बदलकर आती हैं। अधिक कुकर्म करने वाले लोग जानवरों की योनि धारण करते हैं। उनसे अधिक कुकर्म करने वाले वनस्पति की योनि में चले जाते हैं, और जिसके कर्म अच्छे होते हैं वह मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।

आवागमन के विरोध में तीन तर्क

१. इस क्रम में सबसे बड़ी बात यह है कि सारे संसार के विद्वानों और शोध कार्य करने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि इस धरती पर सबसे पहले वनस्पति जगत ने जन्म लिया। फिर जानवर पैदा हुए और उसके करोड़ों वर्ष बाद इन्सान का जन्म हुआ। अब जबकि इन्सान अभी इस धरती पर पैदा ही नहीं हुऐ थे और किसी इन्सानी आत्मा ने अभी बुरे कर्म ही नहीं किए थे तो किन आत्माओं ने वनस्पति और जानवरों के शरीर में जन्म लिया?

२. दूसरी बात यह है कि इस धरणा को मान लेने के बाद यह मानना पड़ेगा कि इस धरती पर प्राणियों की संख्या में लगातार कमी होती रहे। जो आत्मायें मोक्ष प्राप्त कर लेंगी, उनकी संख्या कम होती रहनी चाहिये। जब कि यह तथ्य हमारे सामने है कि इस विशाल धरती पर इन्सान जीव जन्तु और वनस्पति हर प्रकार के प्राणियों की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

३. तीसरी बात यह है कि इस संसार में जन्म लेने वालों और मरने वालों की संख्या में ज़मीन आसमान का अन्तर दिखाईदेता है। मरने वाले मनुष्यों की तुलना में जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या कहीं अधिक है। कभी-कभी करोड़ों मच्छर पैदा हो जाते हैं जब कि मरने

वाले उससे बहुत कम होते हैं। कहीं-कहीं कुछ बच्चों के बारे में यह मशहूर हो जाता है कि वह उस जगह को पहचान रहा है जहां वह रहता था, अपना पुराना नाम बता देता है। और यह भी कि वह दोबारा जन्म ले रहा है। यह सब शैतान और भूत-प्रेत होते हैं जो बच्चों के सिर चढ़ कर बोलते हैं और इन्सान के दीन ईमान को ख़राब करते हैं।

सच्ची बात यह है कि यह सच्चाई मरने के बाद हर इन्सान के सामने आ जायेगी कि मनुष्य मरने के बाद अपने मालिक के पास जाता है और इस संसार में उसने जैसे कर्म किये हैं उनके हिसाब से सज़ा अथवा पुरस्कार पायेगा।

कर्मों का फल मिलेगा

यदि वह सतकर्म करेगा भलाई और नेकी की राह पर चलेगा तो स्वर्ग में जायेगा। स्वर्ग जहां सब आराम की चीज़ें हैं। और ऐसी-ऐसी सुखप्रद और आराम की चीज़ें हैं जिनको इस संसार में न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी दिल में उसका ख़्याल गुज़रा और सबसे बड़ी जन्नत (स्वर्ग) की उप्लब्धि यह होगी कि स्वर्गवासी लोग वहां अपने मालिक की अपनी आंखों से दर्शन कर सकेंगे। जिसके बराबर विनोद और मज़े की कोई चीज़ नहीं होगी।

इसी प्रकार जो लोग कुकर्म (बुरे काम) करेंगे पाप करके अपने मालिक की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे, वह नर्क में डाले जायेंगे, वह वहां आग में जलेंगे। वहां उन्हें हर पाप की सज़ा और दंड मिलेगा। और सब से बड़ी सज़ा यह होगी कि वह अपने मालिक के दर्शन से वंचित रह जाऐंगे। और उन पर उनके मालिक का अत्यन्त क्रोध होगा।☆

☆ स्वर्ग और नर्क और इसके बारे में दूसरी अधिक जानकारी के लिए पढ़ें "मरने के बाद क्या होगा?" (मौलाना आशिक इलाही बुलन्दशहरी)

ईश्वर का साझी बनाना सबसे बड़ा पाप है

उस सच्चे मालिक ने अपने कुरआन में हमें बताया है कि नेकियों, सतकर्म, पुण्य औरसदाचार छोटे भी होते हैं और बड़े भी इसी प्रकार उस मालिक के यहां गुनाह, कुकर्म, पाप भी छोटे बड़े होते हैं, उसने हमें बताया है।

कि जो पाप हमें सब से अधिक सज़ा का भागीदार बनाता है, और जिसको वह कभी क्षमा नहीं करेगा, और जिस का करने वाला सदैव नर्क में जलता रहेगा, और उसको मौत भी न आयेगी वह उस अकेले मालिक का किसी को साझी बनाना है, अपने शीश और मस्तिष्क को उसके अतिरिक्त किसी दूसरे के आगे झुकाना, अपने हाथ किसी और के आगे जोड़ना, उसके अलावा किसी और को पूजा के योग्य मानना, मारने वाला, ज़िन्दा करने वाला, रोज़ी देने वाला, और लाभ हानि का मालिक समझना, घोर पाप और अत्यन्त अत्याचार है, चाहे वह किसी देवी देवता को माना जाये या सूरज, चांद, नक्षत्र अथवा किसी पीर फ़कीर को। किसी को भी उस मालिक के अलावा पूजा योग्य समझना शिर्क है। जिस को वह मालिक कभी माफ नहीं करेगा, इसके अलावा हर पाप को वह अगर चाहे तो माफ़ (क्षमा) कर देगा। इस पाप को स्वयं हमारी बुद्धि भी इतना ही बुरा समझती है और हम भी इस कर्म को इतना ही नापसंद करते हैं।

एक उदाहरण

उदाहरणार्थ यदि आपकी पत्नी बड़ी झगड़ालू और बात-बात पर गालियां देने वाली हो। और कुछ कहना सुनना नहीं मानती हो लेकिन आप उस से घर से निकल जाने को कह दें तो वह कहती है कि मैं केवल तेरी हूं तेरी रहूंगी, और तेरे दरवाज़े पर मरूंगी और एक पल के लिए तेरे घर से बाहर नहीं जाऊँगी तो आप लाख क्रोध और

गुस्से के बाद भी उससे निर्वाह करने पर विवश हो जाएंगे।

इसके विपरीत यदि आपकी पत्नी अत्यन्त सेवा करने वाली और आज्ञाकारी है, वह हर समय आपका ध्यान रखती है, आप आधी रात को घर लौटते हैं तो आपकी प्रतीक्षा करती रहती है, आपके लिए भोजन गर्म करती है और परोसती है प्यार और प्रेम की बातें करती है, वह एक दिन आप से कहने लगे आप मेरे पतिदेव है। मेरा अकेले आप से काम नहीं चलता, इसलिए अपने पड़ोसी जों है मैंने आज से उन्हें भी अपना पति बना लिया है तो यदि आप में कुछ भी लज्जा और मानवता है और आप के खून में गर्मी है तो आप यह बर्दाशत नहीं कर पायेंगे, या अपनी पत्नी की जान ले लेंगे अथवा स्वंय मर जायेंगे।

आखिर ऐसा क्यों है? केवल इसलिए कि आप अपनी पत्नी के लिए किसी को साझी देखना नहीं चाहते। आप नुत्फे (वीर्य) की एक बूंद से बने हैं तो अपना साझी बनाना पसंद नहीं करते, तो वह मालिक जो उस अपवित्र बूंद से मनुष्य को पैदा करता है, वह कैसे यह बदार्शत कर लेगा कि कोई उसका साझी हो और उसके साथ किसी और की भी पूजा की जाये। जब कि इस पूरे संसार में जिसको जो कुछ दिया है उसी ने दिया है। जिस प्रकार एक वेश्या अपनी मान मर्यादा बेचकर हर आने वाले व्यक्ति को अपने ऊपर अधिकर दे देती है तो इसके कारण वह हमारी आँखों से गिरी हुई रहती है। वह मनुष्य अपने मालिक की आखों में उस से अधिक नीच और गिरा हुआ है जो उसको छोड़कर किसी और की पूजा में विलीन हो। वह कोई देबता या मूर्ति हो अथवा कोई दूसरी वस्तु।

पवित्र कुरआन में मूर्ति पूजा का विरोध

मूर्ति पूजा के लिए कुरआन में एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है जो विचार करने योग्य है।

"अल्लाह को छोड़कर तुम जिन वस्तुओं को पूजते हो वह सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकतीं, और पैदा करना तो दूर की बात है यदि मक्खी उनके सामने से कोई चीज़ (प्रसाद इत्यादि) छीन ले तो वापस नहीं ले सकतीं। फिर कैसे कायर है पूज्य और कैसे कमज़ोर हैं पूजने वाले, और उन्होंने उस अल्लाह की कद्र नहीं की जैसी करनी चाहिये थी जो ताक़तवर और ज़बरदस्त है।"

क्या अच्छी मिसाल है, बनाने वाला तो स्वंय ईश्वर होता है, अपने हाथें से बनायी गयी मूर्तियों के हम बनाने वाले है। यदि इन मूर्तियों में थोड़ी बहुत समझ हाती तो वह हमारी पूजा करतीं।

एक बोदा विचार

कुछ लोगों का मानना यह है कि हम उनकी पूजा इस लिए करते हैं कि उन्होंने ही हमें मालिक का मार्ग दिखाया और उनके वास्ते से हम मालिक की दया प्राप्त करते हैं। यह बिल्कुल ऐसी बात हुई कि कोई कुली से ट्रेन के बारे में मालूम करे जब कुली उसे ट्रेन के बारे में जानकारी दे दे तो वह ट्रेन की जगह कुली पर ही सवार हो जाये, कि इसने ही हमें ट्रेन के बारे में बताया है। इस तरह अल्लाह की सही दिशा और मार्ग बताने वाले की पूजा करना बिल्कुल ऐसा है जैसे ट्रेन को छोड़कर कुली पर सवार हो जाना।

कुछ भाई यह भी कहते हैं कि हम केवल ध्यान जमाने के लिए इन मूर्तियों को रखते हैं। यह भी खूब रही कि खूब ग़ौर से कुत्ते को देख रहे हैं और कह रहे है कि पिताजी का ध्यान जमाने के लिए कुत्ते को देख रहे हैं। कहां पिताजी और कहां कुत्ता? कहां यह कमज़ोर मूर्ति और कहां वह अत्यन्त बलवान, करुणामय, दयावान मालिक, इस से ध्यान बंधेगा या हटेगा।

निष्कर्ष यह है कि किसी भी प्रकार से किसी को भी उसका साझी

मानना सबसे बड़ा पाप है जिसको ईश्वर कभी भी माफ़ नहीं करेगा, और ऐसा आदमी सदा के लिए नर्क का ईंधन बनेगा।

सर्वश्रेष्ठ नेकी ईमान है

इसी तरह सबसे बड़ी भलाई, पुण्य और नेकी "ईमान" है जिसके बारे में संसार के तमाम धर्म वाले कहते हैं कि सब कुछ यहीं छोड़ जाना है। मरने के बाद आदमी के साथ केवल ईमान जायेगा। ईमानदारी या ईमान वाला उसको कहते हैं जो हक़ वाले को हक़ देने वाला हो। और हक़ मारने वाले को ज़ालिम कहते हैं। इस मनुष्य पर सब से बड़ा अधिकार उसके पैदा करने वाले का है। वह यह कि सब को पैदा करने वाला, मारने वाला, ज़िन्दगी देने वाला, मालिक, रब, और पूजा के योग्य वह अकेला है तो फिर उसी की पूजा की जाये, उसी को मालिक लाभ-हानि इज़्ज़त-ज़िल्लत देने वाला समझा जाये और यह दिया हुआ जीवन उसी की मर्ज़ी और आज्ञा पालन के साथ व्यतीत किया जाए, अर्थात उसी को माना जाये और उसी की मानी जाये इसी का नाम ईमान है। उस मालिक को अकेला माने बिना और उसके आज्ञा पालन के बिना इन्सान ईमानदार नहीं हो सकता। अपितु वह बेईमान कहलाएगा।

मालिक का सबसे बड़ा हक़ (अधिकार) मारकर लोगों के सामने ईमानदारी दिखाना ऐसा ही है कि एक डाकू बहुत बड़ी डकैती से धनवान बन जाये और फिर दुकान पर लालाजी से कहे कि आपका एक पैसा हिसाब में ज़्यादा चला गया है आप ले लीजिए। इतना माल लूटने के बाद एक पैसे का हिसाब देना जैसी ईमानदारी है अपने मालिक को छोड़कर किसी और की पूजा अर्चना करना उस से भी बुरी ईमानदारी है।

ईमानदारी केवल यह है कि इन्सान अपने मालिक को अकेला माने, उस अकेले की पूजा करे, और उसके द्वारा दिये गये जीवन की

हर घड़ी को मालिक की मर्ज़ी और आज्ञापालन के साथ व्यतीत करे। उसके दिये हुए जीवन को और उसकी आज्ञा के अनुसार बिताना ही धर्म कहलाता है और उसकी आज्ञा का उल्लंघन करना अधर्म।

सच्चा धर्म

सच्चा धर्म शुरु से ही एक है और सब की शिक्षा है कि उस अकेले को माना जाये, और उसका आज्ञा पालन किया जाये पवित्र क़ुरआन ने कहा है "धर्म तो अल्लाह का केवल इस्लाम है और इस्लाम के अतिरिक्त जो भी धर्म लाया जायेगा वह मान्य नहीं है।"

(सूरह-आले इमरान : ८५)

इन्सान की कमज़ोरी है कि उसकी आंख एक विशेष सीमा तक देख सकती है, उसके कान एक सीमा तक सुन सकते हैं, चखने और छूने की शक्ति भी सीमित है, इन पांच इन्द्रियों से उसको ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार बुद्धि के कार्य की भी एक सीमा है।

वह मालिक किस तरह का जीवन पसन्द करता है, उसकी पूजा किस प्रकार की जाये, मरने के बाद क्या होगा? स्वर्ग और नर्क में ले जाने वाले कर्म क्या हैं? यह सब मनुष्य की बुद्धि और स्वंय इन्सान पता नहीं लगा सकता।

ईशदूत

इन्सान की इस कमज़ोरी पर दया करके उसके मालिक ने उन महान पुरुषों पर जिन को उसने इस पदवी के योग्य समझा अपने दूतों (फरिश्तों) के द्वारा अपने आदेश भेजे जिन्होनें मनुष्य को जीवन व्यतीत करने और उनकी उपासना के ढंग बताये और जीवन की वह हकीकतें बतायीं जो वह अपनी बुद्धि के आधार पर नहीं समझ सकता था। ऐसे महान पुरुषों को नबी, रसूल या पैग़म्बर (संदेष्टा) कहा जाता है। उसे अवतार भी कह सकते हैं यदि अवतार का मतलब यह

हो जिस पर उतारा जाये। आजकल अवतार का मतलब यह समझा जाता है कि वह स्वयं ईश्वर है अथवा ईश्वर उसके रूप में उतरा। यह अन्धविश्वास है। यह बहुत बड़ा पाप है। इस अन्धविश्वास ने एक मालिक की पूजा से हटा कर मनुष्य को मूर्ति पूजा के दलदल में फंसा दिया।

यह महापुरुष जिन को अल्लाह ने लोगों को सच्चा मार्ग बताने के लिए चुना, और जिनको नबी, रसूल कहा गया। हर बस्ती और क्षेत्र, और हर ज़माने में आते रहे हैं। उन सब ने एक ईश्वर को मानने, केवल उसी अकेले की पूजा करने और उसकी मर्ज़ी से जीवन व्यतीत करने का जो ढंग (शरीअत या धार्मिक कानून) वह लाये हैं, उसका पालन करने को कहा। उनमें से एक रसूल ने भी एक ईश्वर के अलावा किसी की भी पूजा के लिए नहीं बुलाया, अपितु उन्होंने सब से ज़्यादा इसी पाप से रोका। उनकी बातों पर लोगों ने यक़ीन किया और सच्चे रास्तों पर चलने लगे।

मूर्ति पूजा का आरम्भ

ऐसे तमाम संदेष्टा (पैग़म्बर) और उनके अनुयायी मनुष्य थे, उनको मौत आनी थी (जिसको मृत्यु नहीं वह केवल अल्लाह है) नबी या रसूल के मरने के पश्चात उनके अनुयायियों को उनकी याद आयी और वे उन के दुःख में बहुत रोते थे। शैतान को अवसर मिल गया वह मनुष्य का दुश्मन है। और मनुष्य की परीक्षा के लिए उस मालिक ने उसको बहकाने और बुरी बातें उसके दिल में डालने की शक्ति दी है कि देखें कौन उस पैदा करने वाले मालिक को मानता है और कौन शैतान को मानता है।

शैतान लोगों के पास आया और कहा कि तुम्हें अपने महागुरू (रसूल या नबी) से बड़ा प्रेम है। मरने के बाद वे तुम्हारी निगाहों से ओझल हो गये हैं। अतः मैं उनकी एक मूर्ति बना देता हूँ उसको देख

कर तुम सन्तुष्टि पा सकते हो। शैतान ने मूर्ति बनाई। जब उनका जी करता वे उसे देखा करते थे। धीर-धीरे जब इस मूर्ति का प्रेम उनके मन में बस गया तो शैतान ने कहा कि यदि तुम इस मूर्ति के आगे अपना सिर झुकाओगे तो इस मूर्ति में भगवान को पाओगे। मनुष्य के दिल में मूर्ति की बड़ाई पहले ही भर चुकी थी इसलिए उसने मूर्ति के आगे सिर झुकाना और उसे पूजना आरम्भ कर दिया और यह मनुष्य जिसके पूजने योग्य केवल एक ईश्वर था, मूर्तियों को पूजने लगा और शिर्क में फंस गया।

इस समस्त संसार का सरदार (मनुष्य) जब पत्थर या मिट्टी के आगे झुकने लगा तो वह ज़लील हुआ और मालिक की निगाह से गिर कर सदा के लिए नर्क का ईंधन बन गया। उसके बाद अल्लाह ने फिर अपने रसूल भेजे जिन्होंने लोगों को मूर्ति पूजा और अल्लाह के अलावा दूसरे की पूजा से रोका, कुछ लोग उनकी बात मानते रहे तथा कुछ लोगों ने उनकी अवमानना की। जो लोग मानते थे अल्लाह उनसे प्रसन्न होते, और जो लोग उनके उपदेशों की अवहेलना करते उनके लिए आसमान से विनाश के फैसले कर दिये जाते।

रसूलों की शिक्षा

एक के बाद एक नबी और रसूल आते रहे उनके धर्म का आधार एक होता, वह एक धर्म की ओर बुलाते कि एक ईश्वर को मानो, किसी को उसके व्यक्तित्व और गुणों में साझी न बनाओ, उसकी पूजा में किसी को साझी न करो, उसके सब रसूलों को सच्चा जानो, उसके फरिश्तों को जो उसकी पवित्र मख़्लूक हैं न खाते पीते हैं न सोते हैं, हर काम में मालिक की आज्ञा पालन करते हैं, सच्चा जानो, उसने अपने फरिश्तों के माध्यम से वाणी भेजी या ग्रन्थ उतारे हैं उन सब को सच्चा जानो, मरने के बाद दोबारा जीवन पाकर अपने अच्छे बुरे

कार्यों का बदला पाना है इस पर यक़ीन करो, और यह भी जानो कि जो भाग्य अच्छा या बुरा है वह मालिक की ओर से है और मैं इस समय जो शरीअत और जीवन बिताने के ढंग लेकर आया हूं उनका पालन करो।

जितने अल्लाह के नबी और रसूल आये सब सच्चे थे और उन पर जो धार्मिक ग्रन्थ उतरे वह सब सच्चे थे उन सब पर हमारा ईमान (श्रद्धा) है और हम उनमें अन्तर नहीं करते। सच्चाई का तराजू यह है कि जिन्होंने एक ईश्वर को मानने की ओर आमन्त्रित किया हो और उनकी शिक्षाओं में एक मालिक को छोड़कर किसी दूसरे की पूजा, या खुद उनकी पूजा की बात न हो। अतः जिन महापुरूषों के यहां मूर्तिपूजा या अनेकेश्वरवाद की शिक्षा हो वे या तो रसूल नहीं हैं अथवा उनकी शिक्षाओं में फेरबदल हो गया है। मुहम्मद साहब के पूर्व के तमाम रसूलों की शिक्षाओं में फेरबदल कर दिया गया है और कहीं-कहीं ग्रन्थों को भी बदल दिया गया है।

अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (स०)

यह एक बहुमूल्य सत्य है कि हर आने वाले रसूल और नबी के द्वारा और उनके ग्रन्थों में एक अन्तिम नबी की भविष्यवाणी की गयी है। और यह कहा गया है कि उनके आने के पश्चात और उनको पहचान लेने के बाद सारी प्राचीन शरीअतें और धार्मिक कानून छोड़कर उनकी बात मानी जाये, और उनके द्वारा लाये गये ग्रन्थ और धर्म पर चला जाये। यह भी इस्लाम की सत्यता का प्रमाण है कि प्राचीन ग्रन्थों में अत्यन्त फेरबदल के बावजूद उस मालिक ने अन्तिम रसूल के आने की ख़बर को बदलने न दिया ताकि कोई यह न कह सके कि हमें ख़बर न थी। वेदों में उसका नाम नराशंस, पुराणों में कल्कि अवतार, बाइबिल में फ़ारकलीट और अहमत और बौद्धों में

अन्तिम बुद्ध इत्यादि लिखा गया है।☆

इन धार्मिक ग्रन्थों में मुहम्मद साहब का जन्म स्थान, जन्म तिथि, समय और बहुत से वास्तविक लक्ष्ण पहले ही बता दिये गये थे।

हज़रत मुहम्मद का जीवन परिचय

अब से लगभग साढ़े चौदह सौ वर्ष पूर्व वह अन्तिम ऋषि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहू अलैहि व सल्लम सऊदी अरब के देश मक्का में पैदा हुए। पैदा होने के कुछ माह पूर्व ही उनके पिता का देहान्त हो गया था। माँ भी कुछ ज़्यादा दिन जीवित नहीं रहीं। पहले दादा और उनके बाद आपके चाचा ने उन्हें पाला। संसार में सब से निराला यह इन्सान समस्त मक्का नगर की आंखों का तारा बन गया।

ज्यों-ज्यों आप बड़े होते गये, आपके साथ लोगों का प्रेम बढ़ता गया, आपको सच्चा और ईमानदार कहा जाने लगा, लोग अपनी बहुमूल्य धरोहर (अमानतें) आपके पास रखते। अपने पारस्परिक झगड़ों का निपटारा कराते। काबा, जो मक्का में अल्लाह का पवित्र घर है उसको दोबारा बनाया जा रहा था। उसकी एक दीवार के कोने में एक पवित्र पत्थर है जब उसको उसके स्थान पर स्थापित करने की बारी आयी तो उसकी पवित्रता के कारण मक्का के तमाम वंशज और सरदारों की चाहत थी कि पवित्र पत्थर स्थापित करने का अधिकार उसे ही मिले, इसके लिए तलवारें निकल आयीं, तभी एक समझदार आदमी ने निर्णय किया कि कल जो सबसे पहला आदमी यहां काबा में आयेगा वही इसका फैसला करेगा। सब लोग तैयार हो गये, उस दिन सब से पहले आने वाले हज़रत मुहम्मद सल्ल० थे, सब एक स्वर होकर बोले वाह वाह! हमारे बीच सच्चा और ईमानदार आदमी

☆ अधिक जानकारी के लिए पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय की पुस्तकें "कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब" और "नराशंस और अन्तिम ऋषि" पढ़ें।

आ गया है हम सब राज़ी हैं।

आपने एक चादर बिछाई और उसमें वह पत्थर रखकर कहा हर वंश का सरदार चादर का एक किनारा पकड़कर उठाए, जब पत्थर दीवार तक पहुंच गया तो आप ने अपने हाथों से उसके स्थान पर रख दिया और यह बड़ी लड़ाई समाप्त करवा दी।

इसी प्रकार लोग आपको हर कार्य में आगे रखते थे, आप यात्रा पर जाने लगते तो लोग व्याकुल हो जाते, और जब आप लौटते तो आप से मिलकर फूट-फूटकर रोने लगते।

उन दिनों वहां अल्लाह के घर काबा में ३६० (बुत) देवी देवताओं की मूर्तियां रखी हुई थीं। पूरे अरब देश में ऊंच-नीच, छुआ-छूत, नारी पर अत्याचार, शराब, जुआ, सूद, ब्याज, लड़ाई, बलात्कार जैसी जाने कितनी बुराईयां फैली हुई थीं।

जब आप ४० वर्ष के हुए तो अल्लाह ने अपने फरिश्ते (ईशदूत) के माध्यम से आप पर क़ुरआन उतारना आरम्भ किया और आपको रसूल बनाने का शुभ संदेश, और लोगों को एकेश्वरवाद की तरफ़ बुलाने का दायित्व सौंपा।

सत्य की आवाज़

आपने एक पहाड़ की चोटी पर चढ़कर एक आवाज़ लगायी। लोग इस आवाज़ पर टूट पड़े इसलिए कि यह एक सच्चे ईमानदार आदमी की आवाज़ थी। आपने प्रश्न किया, यदि मैं तुम से कहूं कि इस पहाड़ के पीछे से एक विशाल सेना आ रही है और तुम पर हमला करने वाली है, तो क्या विश्वास करोगे?

सब ने एक स्वर होकर कहा, भला आप की बात पर कौन विश्वास नहीं करेगा, आप कभी झूठ नहीं बोलते और पहाड़ की चोटी से दूसरी ओर देख भी रहे हैं। इसके बाद आपने लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाया, मूर्तिपूजा से रोका और मरने के बाद नर्क की आग से डराया।

मनुष्य की एक कमज़ोरी

मनुष्य की यह कमज़ोरी रही है कि वह अपने पूर्वजों की ग़लत बातों को भी अन्धविश्वास में मानता चला जाता है। इन्सानों की बुद्धि और तर्कों के नकारने के बावजूद मनुष्य पूर्वजों की बातों पर जमा रहता है और उसके अतिरिक्त करना तो क्या, कुछ सुन भी नहीं सकता।

रुकावटें और परीक्षाऐं

यही कारण था कि चालीस वर्ष की आयु तक आपका आदर करने, और सच्चा मानने और जानने पर भी मक्का के लोग आपकी शिक्षाओं के शत्रु हो गये। आप जितना ज़्यादा लोगों को इस सच्चाई की ओर बुलाते, लोग और ज़्यादा दुश्मनी करते। कुछ लोग ईमान वालों को सताते, मारते और आग पर लिटा देते, गले में फन्दा डाल कर घसीटते, और उन पर पत्थर बरसाते। परन्तु आप सब के लिए अल्लाह से प्रार्थना करते, किसी से बदला नहीं लेते, पूरी-पूरी रात अपने मालिक से उनके लिए हिदायत की दुआ करते। एक बार मक्का के लोगों से मायूस होकर ताइफ़ नगर की ओर गये। वहां के लोगों ने उस महापुरुष का अनादर किया आपके पीछे लड़के लगा दिये जो आपको भला बुरा कहते। उन्होंने आप को पत्थर मारे जिससे आपके पैरों से रक्त बहने लगा, तक्लीफ़ की वजह से आप कहीं बैठ जाते तो वे लड़के आपको पुनः खड़ा कर देते, और फिर मारते। इस हाल में आप नगर से बाहर निकल कर एक स्थान पर बैठ गये, आप ने उन्हें श्राप नहीं दिया बल्कि अपने मालिक से दुआ़ कि "हे मालिक! इनको समझ दे दे, यह जानते नहीं।" आप को इस पवित्र संदेश और ईशवाणी पहुंचाने के कारण अपना प्रिय नगर मक्का छोड़ना पड़ा, एक घाटी में साढ़े तीन साल क़ैद रहना पड़ा, आप पत्ते खाकर समय

काटते। फिर आप अपने नगर से मदीना नगर में चले गये, वहां भी मक्का वाले विरोधी, फौजे बनाकर बार-बार आप से लड़ने गये।

सत्य की जीत

सत्य की सदा जीत होती है सो यहां भी हुई, २३ साल के कठिन परिश्रम के बाद आप सब पर विजयी हुए और सत्य मार्ग की ओर आपके निःस्वार्थ निमन्त्रण ने पूरे अरब देश को इस्लाम की शीतल छाया में खड़ा कर दिया, और पूरी दुनिया में एक क्रान्ति आ गयी, मूर्तिपूजा बन्द हुई, ऊँच-नीच खत्म हो गयी, और सब लोग एक अल्लाह को मानने और पूजा करने वाले हो गये।

अन्तिम वसीयत

अपनी मृत्यु से कुछ ही वर्ष पूर्व आपने लगभग सवा लाख लोगों के साथ हज्ज किया और समस्त लोगों को अपनी अन्तिम वसीयत की, जिसमें आप ने यह भी कहा, लोगो! तुमसे मरने के बाद जब कर्मो की पूछ होगी तो मेरे विषय में भी पूछा जायेगा, कि क्या मैंने अल्लाह का दीन (धर्म) और सच्चाई लोगों तक पहुंचाई है? सब ने कहा निःसंदेह आप पहुंचा चुके। आप ने आसमान की ओर उंगली उठायी और तीन बार कहा, ऐ अल्लाह आप गवाह रहिये, आप गवाह रहिये, आप गवाह रहिये। इस के बाद आप ने लोगों से फरमाया, यह सच्चा दीन जिन तक पहुंच चुका है वह उनके पास पहुंचाए जिनके पास नहीं पहुंचा है।

आप ने यह भी खबर दी कि मैं अन्तिम रसूल हूँ अब मेरे बाद कोई रसूल न आयेगा, मैं ही वह अन्तिम ऋषि, नराशंस और कल्कि अवतार हूँ जिसकी तुम प्रतीक्षा करते रहे थे और जिसके बारे में तुम सब कुछ जानते हो।

कुरआन में है "जिन लोगों को हम ने किताब दी है वे इस

(पैग़म्बर मुहम्मद) को पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं। हाँ निःसंदेह उन में एक गिरोह हक़ को छिपाता है।"

(सूरह-अल-बक़रा : १४७)

प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य

अब प्रलय तक संसार में आने वाले हर मनुष्य का कर्तव्य है और उसका धार्मिक और इन्सानी दायित्व है कि वह उस अकेले मालिक की पूजा करे, उसके साथ किसी को साझी न जाने और न माने, और उसके अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद साहब को सच्चा जाने, और उनके द्वारा लाए गये दीन और जीवन व्यतीत करने के ढंग का पालन करे, इस्लाम में इसी को ईमान कहा गया है इसके बिना मरने के बाद हमेशा के लिए नर्क में जलना पड़ेगा।

दो प्रश्न

यहां आपके मस्तिष्क में दो सवाल पैदा हो सकते हैं, मरने के बाद स्वर्ग या नर्क में जाना दिखाई तो देता नहीं, उसे क्यों मानें?

इस सम्बन्ध में यह जान लेना उचित होगा कि तमाम प्राचीन ग्रन्थों में स्वर्ग, नर्क का वर्णन किया गया है जिससे यह ज्ञात होता है कि स्वर्ग नर्क का विचार तमाम धर्मों द्वारा प्रमाणित है।

इसे हम एक उदाहरण से भी समझ सकते हैं। बच्चा जब माँ के पेट में होता है, अगर उस से कहा जाये कि जब तुम गर्भ से बाहर निकलोगे तो दूध पियोगे, रोओगे, गर्भ के बाहर तुम बहुत सारी चीज़ें देखोगे तो गर्भ के अन्दर होने की अवस्था में उसे विश्वास नहीं होगा, मगर वह जैसे ही गर्भ के बाहर निकलेगा सब चीजों को अपने सामने पायेगा। इसी प्रकार यह समस्त संसार एक गर्भ अवस्था है यहां से मौत के बाद निकलकर जब मनुष्य आख़रत के संसार में आंखें खोलेगा तो सब कुछ अपने सामने पायेगा।

वहां के स्वर्ग नर्क और दूसरी वास्तविकताओं की ख़बर हमें उस सच्चे ने दी है जिसको उसके जानी दुश्मन भी कभी झूठा न कह सके। और क़ुरआन जैसी पुस्तक ने दी जिसकी सच्चाई हर अपने पराये ने मानी है।

दूसरा सवाल

दूसरी चीज़ जो आपके मन में खटक सकती है यह है कि जब सारे रसूल, धर्म और धार्मिक ग्रन्थ सच्चे थे तो फिर इस्लाम क़ुबूल करना क्या ज़रूरी है?

आज की वर्तमान दुनिया में इसका जवाब बिल्कुल आसान है, हमारे देश की एक संसद (पार्लियामेन्ट) है यहां का एक संविधान है। यहां जितने प्रधानमंत्री आये वे सब भारत के वास्तविक प्रधानमंत्री थे, पंडित जवाहरलाल नेहरू, शास्त्री जी, फिर इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, फिर वी० पी० सिंह इत्यादि, देश की ज़रूरत और समय के अनुकूल जो क़ानून और अध्यादेश उन्होंने पास किये वे सब भारत के क़ानून थे मगर अब जो वर्तमान प्रधानमंत्री हैं। उनकी संसद और सरकार जो भी क़ानून में संशोधन करेगी उससे पुराना क़ानून समाप्त हो जायेगा, और भारत के हर नागरिक के लिए अनिवार्य होगा कि उस नये संशोधित क़ानून का पालन करे। यदि अब कोई भारतीय नागरिक यह कहे कि जब इंदिरा गांधी असली प्रधानमंत्री थीं तो मैं उनके ही क़ानून मानूंगा, इस नये प्रधानमंत्री के क़ानून मैं नहीं मानता और न उनके द्वारा लगाये गये टेक्स दूंगा, तो ऐसे आदमी को हर कोई भारत विरोधी कहेगा और उसे सज़ा का पात्र समझा जायेगा। इसी तरह सारे धर्म और धार्मिक ग्रन्थ अपने अपने समय में आये और सब सत्य की शिक्षा देते थे। इसलिए अब तमाम रसूलों और धार्मिक ग्रन्थों को सच्चा मानते हुए भी अंतिम रसूल मुहम्मद स० पर ईमान लाना हर मनुष्य के लिए अनिवार्य है।

सत्य धर्म केवल एक है

इसलिए यह कहना किसी तरह उचित नहीं कि सारे धर्म ईश्वर की ओर जाते हैं। रास्ते अलग-अलग हैं, मंज़िल एक है। सत्य केवल एक होता है। असत्य बहुत हो सकते हैं। नूर एक होता है, अंधेरे बहुत हो सकते हैं। सच्चा धर्म केवल एक है, वह शुरू ही से एक है। अतः केवल उस एक को मानना और उसी एक की मानना इस्लाम है। धर्म कभी नहीं बदलता केवल शरीअत (क़ानून) समय के अनुसार बदलते रहते हैं और वे भी उसी मालिक के बताए हुए ढंग पर। जब मानव जाति एक है और उनका मालिक एक है तो रास्ता भी केवल एक है, क़ुरआन ने कहा है "धर्म तो अल्लाह का केवल इस्लाम है।"

एक और प्रश्न

यह एक प्रश्न भी मन में आ सकता है कि हज़रत मुहम्मद स०, अल्लाह के सच्चे नबी ईशदूत हैं और वह संसार के अन्तिम दूत भी हैं इसका सुबूत है?

उत्तर साफ़ है कि सर्वप्रथम यह क़ुरआन ईश्वर का कलाम है। उसने संसार को अपने सच्चे होने के लिए जो तर्क दिये हैं वह सब को मानने पड़े हैं। और आज तक उन का विरोध नहीं हो सका है। उसने हज़रत मुहम्मद के सच्चे और अन्तिम नबी (ईशदूत) होने की घोषणा की है। दूसरी बात यह है कि हज़रत मुहम्मद के जीवन का एक एक पल संसार के सामने है। उनका समस्त जीवन इतिहास की खुली किताब है।

संसार में किसी भी मनुष्य का जीवन आपकी जीवनी की तरह सुरक्षित और उजाले में नहीं है। आपके शत्रुओं और इस्लाम दुश्मन इतिहासकारों ने भी कभी यह नहीं कहा कि मुहम्मद साहब ने अपने व्यक्तिगत जीवन में कभी किसी विषय में झूठ बोला है। आपके नगरवासी आपकी सच्चाई की क़समें खाते थे। जिस श्रेष्ठ

व्यक्ति ने अपने निजी जीवन में कभी झूठ नहीं बोला, वह धर्म के नाम पर, और ईश्वर के नाम पर झूठ कैसे बोल सकता था। आपने स्वंय यह बताया है कि मैं अन्तिम नबी हूं। मेरे बाद अब कोई नबी नहीं आयेगा न कोई धर्म आयेगा, और मेरे आने के विषय में सब नबियों ने भविष्यवाणी की है। सारे धार्मिक ग्रन्थों में अन्तिम ऋषि, कल्कि, अवतार की जो भविष्यवाणी की गयी है और जो लक्षण और पहचानें बताई गयी हैं वह केवल हज़रत मुहम्मद के विषय में साबित होती है:

डा० वेद प्रकाश उपाध्याय

डा० वेद प्रकाश उपाध्याय ने लिखा है कि जो इस्लाम ग्रहण न करे और हज़रत मुहम्मद और आपके धर्म को न माने वह हिन्दू भी नहीं है। इसलिए कि हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों में कल्कि अवतार और नराशंस के इस धरती पर आ जाने के बाद उनको और उनका धर्म मानने को कहा गया है तो जो हिन्दू भी अपने धार्मिक ग्रन्थों में आस्था रखता हो इसे माने बिना मरने के बाद जीवन में नर्क की आग, वहां ईश्वर के साक्षात दर्शन से वंचित और उसके क्रोध का भागीदार होगा।

ईमान की आवश्यकता

मरने के बाद की ज़िन्दगी के अलावा इस संसार में भी ईमान और इस्लाम हमारी आवश्यकता है और मानव का कर्तव्य है कि एक मालिक की पूजा करे, जो उसका द्वार छोड़कर दूसरों के सामने झुकता फिरे वह कुत्तों से भी गया गुज़रा है। कुत्ता भी अपने मालिक के द्वार पर पड़ा रहता है और उसी से आस लगाता है। वह कैसा इंसान, जो अपने सच्चे मालिक को भूल कर दर-दर झुकता फिरे।

परन्तु इस ईमान की ज़्यादा आवश्यकता मरने के बाद के लिए है जहां से इंसान वापिस न लौटेगा और मौत पुकारने पर भी उसको मौत

न मिलेगी। उस समय पछतावा और पश्चाताप भी कुछ काम न देगा; यदि मनुष्य यहां से ईमान के बिना चला गया तो हमेशा नर्क की आग में जलना पड़ेगा। यादि इस संसार में आग की एक चिंगारी भी हमारे शरीर को छू जाये हम तड़प जाते हैं। तो नर्क की आग कैसे सहन हो सकेगी जो इस आग से सत्तर गुना तेज़ है और उसमें हमेशा जलना है जब एक खाल जल जाएगी तो दूसरी खाल बदल दी जाएगी और निरन्तर यह सज़ा भुगतनी होगी।

प्रिय पाठक

मेरे प्रिय पाठक! मौत का समय न जाने कब आ जाये जो सांस अन्दर है उसके बाहर आने का भी भरोसा नहीं और जो सांस बाहर है उसके अन्दर जाने का भरोसा नहीं। मौत से पहले समय है अपनी सब से पहली और सब से बड़ी ज़िम्मेदारी का ध्यान कर लें। ईमान के बिना न यह जीवन, जीवन है और न मरने के बाद आने वाला जीवन।

कल सब को अपने मालिक के पास जाना है वहां सब से पहले ईमान की पूछ होगी। मुझे भी स्वार्थ है इस बात का कि कल हिसाब के दिन आप यह न कह दें कि हम तक बात पहुंचाई ही नहीं थीं।

मुझे आशा है कि यह सच्ची बातें आप के दिल में घर कर गयी होंगी। तो आइये भाग्यवान, सच्चे दिल और सच्ची आत्मा वाले मेरे प्रिय पाठक, उस मालिक को गवाह बनाकर और ऐसे सच्चे दिल से जिसे दिलों के भेद जानने वाला मान ले इक़रार करें और प्रण लें :-

"अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम"

अर्थ : मैं गवाही देता हूं इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई पूजा के योग्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, और हज़रत **मुहम्मद सल्लल्लाहु** अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे बन्दे

और रसूल हैं।

मैं तौबा करता हूं कुफ्र (नास्तिकता) से शिर्क (किसी प्रकार भी अल्लाह का साझी बनाने) से और समस्त प्रकार के पापों से। और इस बात का प्रण लेता हूं कि अपने पैदा करने वाले सच्चे मालिक के सब आदेश मानूंगा और उसके सच्चे नबी हज़रत मुहम्मद स० की सच्ची पैरवी (अनुसरण) करूंगा।

करुणामय और दयावान मालिक मुझे और आपको इस राह पर मरते दम तक क़ायम रखे।

मेरे प्रिय पाठक! अगर आप अपनी मौत तक इस यक़ीन और ईमान के अनुरूप अपना जीवन गुज़ारते रहे तो फिर मालूम होगा कि आप के इस भाई ने कैसा प्रेम का हक़ अदा किया।

ईमान की परीक्षा

इस इस्लाम और ईमान की वजह से आपकी परीक्षा भी हो सकती है। मगर जीत हमेशा सच की होती है। यहां भी सत्य की जीत होगी। और अगर जीवन भर परीक्षा से गुज़रना पडे तो यह सोच कर सह जाना कि इस दुनिया का जीवन तो कुछ दिनों तक सीमित है। मरने के बाद का अपार जीवन, वहां का स्वर्ग और उसके सुख प्राप्त करने के लिए, और अपने मालिक को राज़ी (प्रसन्न) करने के लिए, और उसके साक्षात दर्शन के लिए यह परीक्षायें कुछ भी नहीं हैं।

आपका कर्तव्य

एक बात और, ईमान और इस्लाम की यह सच्चाई हर उस भाई का हक़ और अमानत है जिस तक नहीं पहुंचा है। अतः आपका भी कर्तव्य है कि निःस्वार्थ होकर केवल अपने भाई की हमदर्दी में और

उसे मालिक के क्रोध, नर्क की आग और सज़ा से बचाने के लिए, दुख दर्द के एहसास के साथ जिस प्रकार प्यारे नबी ने यह सच्चाई पहुंचाई थी। आप भी पहुंचायें, उनको सही सच्चा रास्ता समझ में आने के लिए अपने मालिक से दुआ करें। ऐसा व्यक्ति क्या इंसान कहलाने का हक़दार है जिसके सामने एक अन्धा, दिखाई न देने की वजह से आग के अलाव में गिर जाये और वह एक बार भी फूटे मुंह से यह न कहे कि तुम्हारा यह मार्ग आग के अलाव की ओर जाता है। इन्सानियत की बात यह है कि उसको रोके, उसको पकड़ कर बचाये और प्रण ले कि अपने होते हुए मैं हरगिज़ तुम्हें आग में गिरने नहीं दूंगा।

ईमान लाने के बाद हर मुसलमान पर हक़ है कि जिसको दीन की, नबी की, कुरआन की हिदायत मिल चुकी है वह शिर्क और कुफ़्र की आग में फंसे लोगों को बचाने की धुन में लग जाये उनकी ठोडी में हाथ दे, उनके पांव पकड़े कि लोग ईमान से हटकर ग़लत रास्ते पर न जायें। नि:स्वार्थ और सच्ची हमदर्दी में कही गयी बात दिल पर असर करती है अगर आप की वजह से एक आदमी को भी ईमान मिल गया और एक आदमी भी मालिक के सच्चे द्वार पर लग गया तो बेड़ा पार हो जाएगा। इसलिए अल्लाह उस आदमी से ज़्यादा प्रसन्न होता है जो किसी को कुफ़्र और शिर्क से निकालकर सच्चाई के रास्ते पर लगा दे। जिस तरह आपका बेटा अगर आपका बाग़ी होकर दुश्मन से जा मिले और उसी का कहना मानता रहे। यदि कोई सज्जन उसको समझा बुझाकर आपका आज्ञाकारी बना दे तो आप उस सज्जन से कितने प्रसन्न होंगे।

मालिक उस बन्दे से इस से ज़्यादा प्रसन्न होता है जो दूसरे तक ईमान पहुंचाने और बाँटने का माध्यम बन जायें।

ईमान लाने के बाद

इस्लाम ग्रहण करने के पश्चात जब आप मालिक के सच्चे बन्दे बन गये तो अब आप पर रोजाना पांच बार नमाज़ अनिवार्य है आप इसे सीखें और पढ़ें। इस से आत्मा की शान्ति और अल्लाह का प्रेम बढ़ेगा। रमज़ान आयेगा तो एक महीने के रोज़े रखने होंगें। मालदार हैं तो पूरी उम्र में एक बार हज के लिए जाना पड़ेगा।

ख़बरदार! अब आपका शीश (सिर) अल्लाह के अलावा किसी के आगे न झुके। आप पर शराब, जुआ, सूद (ब्याज) सुअर का मीट, रिश्वत और हर हराम चीज़ निषेध है और उससे बचना है। और अल्लाह की पवित्र बताई हुई चीज़ों को पूरे चाव (शौक) से सेवन करना है।

अपने मालिक द्वारा दिया गया पवित्र ग्रंथ (कुरआन) नियमित रूप से पढ़ना है और पवित्रत और सफाई के नियम सीखने हैं और सच्चे दिल से यह प्रार्थना करनी है कि हमारे मालिक! हमको, हमारे दोस्तों को, परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों को, और इस भूमण्डल पर बसने वाली पूरी मानवता को ईमान के साथ ज़िन्दा रख और ईमान के साथ इन्हें **मौत दे। इसलिए** कि ईमान ही इस मानव समाज का पहला और अन्तिम सहारा है। जिस प्रकार अल्लाह के एक दूत हज़रत इब्राहीम जलती हुई आग में अपने ईमान की बदौलत कूद गये थे और उन का बाल बांका नहीं हुआ था आज भी इस ईमान की शक्ति आग को पुष्प बना सकती है और सत्य मार्ग की हर रुकावट को ख़त्म कर सकती है।

हो अगर ईमान इब्राहीम का उत्पन्न आज।
पुष्प के स्वभाव से हो आग भी सम्पन्न आज।।

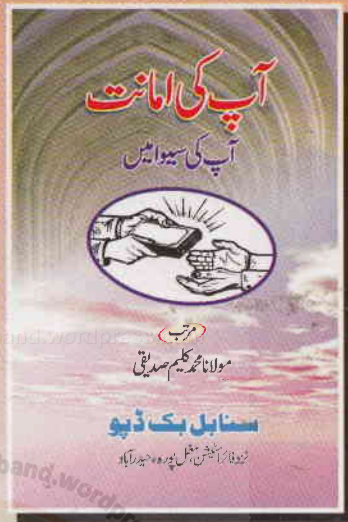
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीक़ी

फुलत, मुजफ़्फ़र नगर

यू० पी० - २५१२०१


आप की अमानत
आप की सेवा में
प्रस्तुति
मौलाना मुहम्मद कलीम सिद्दीकी
प्रकाशक
सनाबिल बुक डिपो


آپ کی امانت
آپ کی سیوا میں
مرتب
مولانا محمد کلیم صدیقی
سنابل بک ڈپو
نزد فائر اسٹیشن مغل پورہ، حیدرآباد


మీ సొత్తు మీ పరం